भूमिका

'आदिवासी' आदिम सभ्यता के धरोहर हैं। इस समुदाय ने हजारों वर्षों से आदिम सभ्यता को संजोकर रखा है। दुर्गम जंगलों-पहाड़ों में इनका निवास स्थान रहा है। ये सहज-सरल प्रकृतिधर्मी लोग हैं। इनकी बोली-भाषा, परंपरा, रहन-सहन तथा संस्कृति विशिष्ट है। इनकी सांस्कृतिक परम्पराओं का स्वरूप तर्कों पर आधारित है। ये प्रकृति के संरक्षक हैं परन्तु अपने भोलेपन के कारण ये हमेशा हाशिए पर रहे हैं। आज इनकी अस्मिता पर चौतरफा हमला जारी है। एकतरफ इन्हें जल-जंगल-ज़मीन के इनके नैसर्गिक अधिकार से वंचित करने का कुचक्र लगातार जारी है, दूसरी तरफ इनकी संस्कृति और मानवीयता को भी बर्बाद करने का सुनियोजित प्रयास चल रहा है।

भारतीय समाज में व्याप्त सामाजिक विषमताओं को लेकर अक्सर मेरे मन में प्रश्न उठते रहे हैं। झारखण्ड राज्य की निवासी होने कारण बचपन से ही मैं आदिवासी संस्कृति से जुड़ी रही हूँ। मेरी चाची उरांव समुदाय से हैं। उनके जरिए मैं इस मूलनिवासी समुदाय की विशिष्टताओं को और करीब से जान-समझ पाई। अपने शोध अध्ययन को लेकर शुरू से मेरा रुझान इस ओर बढ़ता रहा। जब एम. फिल. के लिए विषय चयन की बात आई तो मेरे मन में कई विषय थे। इस बीच वर्धा आकर मैं कई दलित-आदिवासी पत्रिकाओं से भी जुड़ी। उनमें 'आदिवासी सत्ता' के कलेवर और उच्च स्तरीय सामग्री ने मुझे हमेशा आकर्षित किया। यह पत्रिका आदिवासी केंद्रित तो है ही, इसके साथ-साथ मूलनिवासी संकल्पना के साथ यह पूरे बहुजन समाज के उत्थान की बात करती है। इस पत्रिका का संपादकीय बौद्धिक-वैचारिक रूप से बहुत समृद्ध होता है। दुर्ग-भिलाई, छतीसगढ़ से निकलने वाली इस पत्रिका के संपादक श्री के.आर.शाह हैं। आदिवासियों की भाषा-बोली, साहित्य, इतिहास, प्रतिरोध एवं उनकी संस्कृति से जुड़े मुद्दों पर महत्वपूर्ण

सामग्रियाँ इसमें निरंतर छपती रही हैं। पत्रिका सदैव आदिवासी अस्मिता को स्थापित करने के लिए संघर्षरत है। इसमें आदिवासी अस्मिता से जुड़े सभी पहलुओं पर संपादकीय, लेख, फीचर, चित्र आदि छपते रहते हैं।

दलित पत्रिकाओं पर कई शोध हुए हैं, लेकिन आदिवासी पत्रिकाओं पर मेरी जानकारी में कोई शोध नहीं हुआ है। इसी बीच एम.फिल. प्रैक्टिकम के तहत अपने मार्गदर्शक डॉ. सुनील कुमार से बात करके मैंने 'आदिवासी सत्ता' पर एक शोध पत्र भी जमा किया था। आगे चलकर जब एम.फिल. विषय तय करने की बात हुई तो अपने शोध निर्देशक के साथ विचार-विमर्श के बाद मेरा विषय तय हुआ- *आदिवासी अस्मिता के प्रश्न और 'आदिवासी सत्ता' पत्रिका (2013-15)*

इस लघु शोध प्रबंध को अध्ययन की सुविधा के लिए कुल तीन अध्यायों में विभक्त किया गया है। पहला अध्याय- *' आदिवासी अस्मिता: विविध परिप्रेक्ष्य'* है, जिसके अंतर्गत तीन उप अध्याय हैं। प्रथम उप अध्याय *'आदिवासी: अर्थ एवं स्वरूप'* में 'आदिवासी' शब्द की व्याख्या करते हुए भारतीय एवं पाश्चात्य विद्वानों की परिभाषाओं एवं ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के आलोक में 'आदिवासी' के स्वरूप को स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है। दूसरे उप अध्याय *'अस्मिता' से आशय'* में 'अस्मिता' का विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। तीसरे उप अध्याय 'आज का समय और आदिवासी अस्मिता' में आदिवासी अस्मिता से जुड़े महत्वपूर्ण प्रश्नों पर बात की गई है।

दूसरा अध्याय- *'हिंदी आदिवासी पत्र-पत्रिकाएँ और 'आदिवासी सत्ता'* है। इसके अंतर्गत प्रथम उप अध्याय *'प्रमुख हिंदी आदिवासी पत्र-पत्रिकाएँ'* में आदिवासी अस्मिता को बचाए रखने में जिन पत्र-पत्रिकाओं ने पहल की है और सक्रिय हैं, उनका संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया गया है। दूसरे उप अध्याय *'आदिवासी सत्ता' का परिचय'* में 'आदिवासी सत्ता' पत्रिका का परिचय, उसका उद्धेश्य एवं आदिवासी अस्मिता के क्षेत्र में उनके योगदान की संक्षिप्त चर्चा की गई है।

तीसरा अध्याय- *'आदिवासी अस्मिता के प्रश्न और 'आदिवासी सत्ता'* प्रस्तुत शोध कार्य का प्रमुख अध्याय है। इसके अंतर्गत प्रथम उप अध्याय *'अस्तित्व का संकट'* में अस्तित्व के संकट से जूझ रहे आदिवासियों के वास्तविक यथार्थ को 'आदिवासी सत्ता' ने किस प्रकार उठाया है, इसको प्रस्तुत करने की कोशिश की गई है। दूसरे उप अध्याय *'भाषा, साहित्य व संस्कृति का सवाल'* में इन मसलों पर 'आदिवासी सत्ता' में प्रकाशित सामग्रियों का अध्ययन विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। तीसरे उप अध्याय *'ऐतिहासिक संदर्भ'* में आदिवासियों के ऐतिहासिक योगदान, आदिवासी विद्रोह और आंदोलनों पर 'आदिवासी सत्ता' का रुख क्या रहा है, इसकी पड़ताल की गई है। चौथे उप अध्याय 'प्रतिरोध के स्वर' में आदिवासी प्रतिरोधों को पत्रिका ने किस तरह लिया है, इसका अध्ययन किया गया है। अंतिम उप अध्याय *'आदिवासी बनाम अन्य वंचित अस्मिताएँ: समन्वय की जरूरत'* है। 'आदिवासी सत्ता' आदिवासी के अतिरिक्त दलित व पिछड़े समाज के उत्थान को किस तरह लेती है और इन सभी अस्मिताओं को एक मंच पर लाने की जरूरत के प्रति क्या सोचती है, इस दिशा में कितनी कोशिश की गई है- इन सबकी विवेचना इस उप अध्याय में की गई है।

मैं सर्वप्रथम बाबासाहेब डॉ. अम्बेडकर को नमन करती हूँ, जो मेरे प्रेरणा के स्रोत रहे हैं। जिनके विचारों की प्रेरणा से टूटते मनोबल को समय-समय पर सहारा मिला है। जिनके दिए गए अधिकारों की वजह से मैं आज उच्च शिक्षा तक पहुँच पाई हूँ। मैं उन्हें बार-बार नमन करना चाहती हूँ।

यह शोध कार्य मेरे शोध निर्देशक डॉ. सुनील कुमार के सक्रिय सहयोग, स्नेहिल व्यवहार और समुचित दिशानिर्देश के बिना कत्तई संभव नहीं था। कोलकाता रहते हुए भी वे लगातार शोध संबंधी खोज-खबर लेते रहे और वर्धा आने के बाद वे लगातार

हम छात्रों के लिए प्रस्तुत रहे। मैं सर के प्रति विनम्रतापूर्वक हार्दिक आभार व्यक्त करती हूँ। मुझे इस मुकाम तक पहुँचाने में माँ-पिताजी, भाई-बहन, नाना-नानी, अन्य परिवारजनों का बहुत बड़ा सहयोग रहा है। इन सबके लिए मैं हृदय से बहुत आभारी हूँ।

मैं विशेष रूप से अनु सुमन बड़ा दीदी की आभारी हूँ, जिसके अमूल्य सहयोग से यह यह शोध कार्य पूरा हो सका। अनु दी कई दिनों तक हम सबके सहयोग के लिए प्रस्तुत रहीं, इसको कभी नहीं भुला जा सकता। मैं अपने धर्मेन्द्र मामा की बहुत-बहुत आभारी हूँ, जिनके सहयोग से मैं पढ़ाई के इस मुकाम तक पहुँच पाई हूँ। साथ ही अपने मित्र राहुल की भी आभारी हूँ, जो मुझे पढ़ाई के लिए हमेशा प्रेरित करते रहते हैं। मैं जेएनयू के शोध छात्र धर्मराज कुमार, पत्रिका के संपादक श्री के आर शाह, आशीष धुर्वे और सुरेश जगन्नाथम के विशेष सहयोग के लिए आभारी हूँ। मेरे अग्रज रवीन्द्र यादव, ईश्वर, प्रिय रचना, सोनम, अनीश, ज्ञान, ज्ञानेश्वर, आराधना, मोनिका दी आदि सभी मित्रों-शुभचिंतकों के प्रति मैं बहुत-बहुत आभार व्यक्त करती हूँ, जिन्होंने मेरे शोधकार्य में सहयोग किया। अपने विश्वविद्यालय के पुस्तकालयकर्मियों का एवं अपने विभाग के कर्मी नितेश बकाले का विशेष रूप से धन्यवाद करना चाहूँगी, जिन्होंने समय पर मुझे किताबें उपलब्ध कराई।

दिनांक-15.12.2016 **(बबीता कुमारी)**

स्थान- हिंदी एवं तुलनात्मक साहित्य विभाग

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा